Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

प्राचीन भारत में चिकित्सा व्यवस्था

शिवलाल*

* एम ए, नेट (इतिहास) गांव लालपुरा पोस्ट,तह-चितलवाना जालौर (राज.) भारत

प्रस्तावना – भारत में प्राचीन काल से ही चिकित्सा कि एक सुव्यवस्थित परम्परा रही है। विभिन्न प्रकार के रोग और उनका उपचार के तरीको का भारतीय साहित्य में उल्लेख मिलता है। सिंधु घाटी सभ्यता से भारत में चिकित्सा प्रणाली के बारे में जानकारी मिलती है। कालीबंगा से एक ऐसा शव मिला जिसके मस्तिष्क में 6 छेद मिले है, इसी तरह का एक अवशेष लोथल से भी प्राप्त हुआ है। ऋग्वेद में अश्विन को देवताओं का कुशल वैद्य कहा गया है जो अपने औषधो से रोगों को दूर करने में निपुण थे। अथवर्वेद में विविध प्रकार के ज्वरो, यक्ष्मा, अपचित, अतिसार, जलोदर जैसे रोगों के प्रकार एंव उनकी चिकित्सा का विधान प्रस्तुत किया गया। अथर्ववेद के विषस्य विषमौषधम अर्थात विष कि दवा विष होती है का उल्लेख अथर्ववद में मिलती है।

साईंस में विभिन्न प्रकार के रोगों तथा उनके निवाकरण के बारे में जानकारी मिलती है। अर्थववेद में विभिन्न प्रकार कि जड़ी बूटियों का भी उल्लेख मिलता है इसके साथ ही जल चिकित्सा, सूर्य किरण चिकित्सा, मानसिक चिकित्सा पर का विस्तृत विवरण दिया गया है।

प्राचीन भारतीय चिकित्सकों ने इस समय चिकित्सा के नाम पर व्याप्त अभिचार, तंत्र-मंत्र, धार्मिक अनुष्ठान, धर्म आदि को चुनौती दी। साथ ही साथ ऊँच-नीच अर्थात सोपान क्रमिक व्यवस्था को इन चिकित्सकों ने नकार दिया। यही कारण है कि धर्मशास्त्रों और स्मृतियों के रचनाकार सामान्यत: चिकित्सकों विशेषकर शल्य चिकित्सकों को आदर की दृष्टि से नहीं देखते थे। इस तरह बिना भेद-भाव के इन चिकित्साशास्त्रियों ने भारतीय चिन्तन परम्परा में पहली बार दोषरहित ज्ञान मीमांसा के मूल सिद्धान्त को स्थापित किया था।

महाभारत में चिकित्सा विज्ञान से संबंधित जानकारी मिलती है। महाभारत में एक घटनाक्रम का जिक्र है जिसमें एक बार भीम को दुर्योधन ने विष खिलाकर गहरे जल में फेंक दिया था और वह अचेतावस्था में नागलोक जा पंहुचा। जहाँ सांपो के काटने से उसके शरीर से विष का प्रभाव दूर हो गया और वह तत्काल स्वस्थ हो गया।

बुद्धयुग में औषधी शास्त्र के बारे में व्यापक जानकारी मिलती है। बौद्ध काल में चिकित्सा विषयक सूचनाएं विनय-पिटक, दीपवंश महावंश, मिलिंदपह्नों एवं विसुद्धिमग्ग से मिलती है। चिकित्सा विज्ञान से संबंधित एक महत्वपूर्ण ग्रंथ चीनी तुर्किस्तान (मध्य एशिया) से प्राप्त हुआ है। यह पाण्डुलिपि संस्कृत भाषा तथा गुप्त लिपि में है, जिसे एक अधिकारी बोअर ने प्राप्त किया था इसलिए बोअर पाण्डुलिपि के रूप में जाना जाता है। इसके अतिरिक्त मौर्य एवं सातवाहन काल के कुछ अभिलेखों से भी प्राचीन भारतीयजातको ग्रंथो के अनुसार तक्षशिला विश्वविद्यालय में आयुर्वेद कि शिक्षा प्रदान की जाती है। यहां पर दूर विद्यार्थी आर्युविद की चिकित्सा प्राप्त करने आते है। जीवक बुद्धकाल का प्रसिद्ध चिकित्सक था। जिसे बिम्बिसार ने अपना राजवैद्य बनाया था उसने बिम्बिसार, प्रघोत, महात्मा बुद्ध की चिकित्सा कर उन्हें रोगमुक्त किया। इसका शुल्क 1600 कार्षापण था।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में चिकित्सा व्यवस्था का उल्लेख है। अर्थशास्त्र में वैद्यो, चीर फाड़ करने के यंत्रो, भिषजो, महिला चिकित्सको का भी उल्लेख किया गया है। शवों को विकृत से बचाने के लिए तेल में डुबोकर रखा जाता था।

कुषाण काल में चिकित्सा क्षेत्र में सर्वाधिक उन्नति हुई। कनिष्क काल में चरक नामक प्रसिद्ध चिकित्सक थे। कनिष्क ने इनको राजवैद्य नियुक्त किया था। चरक को कायचिकित्सा का जनक कहा जाता है। इन्होने चरक संहिता नामक ग्रंथ लिखा। इसमें शरीर रचना, गर्भ की दशा, शिशु का जन्म तथा विकास, कुष्ठ, ओषधियो की वनस्पतियो का वर्णन। चरक सहिंता में एक वैद्य को दिए गए निर्देश जो वह अपने शिष्यों को प्रक्षिशण समाप्ति के समय देता।

'यदि तुम आपने कार्य में सफलता, धन, सम्मान तथा मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग प्राप्त करना चाहते हो, तो तुम्हें प्रतिदिन प्रात: उठने पर और सोने से पहले सभी प्राणियों विनि तथा के प्राप्त करना हो तो सच्चे हृदय से रोगी के स्वास्थ्य के लिये प्रयास कराकर ही एवं ब्राह्मणों के कल्याण के लिये प्रार्थना करनी पनि रानी के साथ धोखा न करो, मद्यपान मत करो, पाप न करो, तुमारि अपने स्वयं के जीवन के मूल्य विचारवान बना तथा सदैव अपने ज्ञान की वृद्धि के लिये प्रयत्नशील रहो। यदि तुम्हारे मित्र बरे न हो, तुम मुटुभाषी एवं विचारवान बच्चन, मन, बुद्धि तथा इन्द्रियों को उसकी चिकित्सा के अतिरिक्त अन्यत्र किसी रोगी के घर जाना पड़े तो तुम्हें की बातों की चर्चा बाहर नहीं करनी चाहिए और न ही रोगी की दशा के विषय में उस व्यक्ति को बताना चाहिए जिससे रोगी को कोई हानि पहुंच सके।'

'चरक संहिता' का न केवल भारतीय अपितु सम्पूर्ण विश्व चिकित्सा के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

गुप्तकाल में नालंदा विश्वविद्यालय में आयुर्वेद की चिकित्सा दी जाती थी। वाग्भट्ट ने अष्टांगहृदय की रचना की की थी। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्नों में धन्वतरि भी थे। इनका मुख्य योगदान आयुर्वेद की शल्य

चिकित्सा था। इन्होंने नवगीतम नामक ग्रंथ की रचना की थी जिसमें रसो, चूर्णो, तेलों, इत्यादि का वर्णन है। गुप्तकाल में पशु चिकित्सा से संबंधित ग्रंथ भी लिखे गए। पालकाप्य ने हाथियों से संबंधित हस्त्यायुवेर्द और शालिहोत्र ने घोड़ो से संबंधित अश्वशास्त्र की रचना की। गुप्तकाल में नागार्जुन ने रसचिकित्सा का अविष्कार किया था जिसमें यह सिद्धांत प्रतिपादित किया कि सोने, चांदी, ताम्बा, लोहा इत्यादि धातुओं में भी रोग प्रतिरोधक क्षमता थी।

शुश्रुत एक अन्य प्रसिद्ध चिकित्सक थे इन्होने शुश्रुत संहिता लिखी जिसमें विभिन्न प्रकार के शल्य एंव छेदन क्रियाओ का विवरण है। इन्होने मोतियाबिंद पथरी जैसे रोगों के उपचार बताये है।

कालांतर में माधवकरण ने माधवनिदान नामक ग्रंथ लिखा। इसमें भी रोगों के निदान पर विस्तार से चर्चा कि गई है। 11 वी सदी में चक्रपाणीदत ने चरक और शुश्रुत पर टिकाए लिखी साथ ही चिकित्सासारसंग्रह कि रचना की। 12 वी सदी में सारंगधरसंहिता नामक ग्रंथ लिखा गया। जिसमें विभिन्न रसो और विष का वैज्ञानिक विवेचन किया गया। इस प्रकार भारत में चिकित्सा प्रणाली प्राचीन काल से ही विद्यमान रही और वर्तमान में भी भारतीय चिकित्सा प्रणाली काफी मजबूत है और आधुनिक समय की अधिकांश तकनीक भारत में मौजूद है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शर्मा कृष्णगोपाल, जैन हुकुम चंद, भारत का इतिहास, अजमेरा बुक कम्पनी जयपुर 2016.
2. श्रीवास्तव, के.सी. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति।
3. रायचौधरी, एच.सी. पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एन्सिएण्ट इण्डिया।
4. मजूमदार, आर.सी.- हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ इण्डियन पीपुल।

****